IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, December 2024

सावित्री बाई फुले के शैक्षिक विचारों का नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ सरिता शर्मा and पायल रायकवार
प्रधानाध्यापिका (एज्युकेशन), अरिहंत कॉलेज, इन्दौर[1]
एम.एड विद्यार्थी, अरिहंत कॉलेज, इन्दौर[2]

सारांश– शोध पत्र में सावित्रीबाई फूले द्वारा सुधार में योगदान का तथा उनके शैक्षिक विचारों को नई शिक्षा नीति के अंतर्गत समाज सुधार में योगदान का अध्ययन किया गया है । भारत की पहली महिला अध्यापिका व समाज सुधारक सावित्रीबाई फूले का पुरा जीवन महिला अधिकारों के लिए समर्पित रहा है । महिला सशक्तिकरण के लिए काम करने के दौरान उन्हें कड़े संघर्षों को झेलना पड़ा / का सामना करना पड़ा । उन्होंने महिलाओं को शिक्षित करने के लिए अथक प्रयास किए और समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे कन्या शिशु हत्या, बाल विवाह, सती प्रथा, छूआछूत आदि के खिलाफ आवाज उठाई ।

सावित्रीबाई ने अपना जीवन एक मिशन की तरह जिया तथा पूरा जीवन समाज सेवा में बिता दिया । वे एक कवयित्री भी थी । आज वर्तमान युग में महिला शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को विभिन्न क्षेत्रों में स्वतंत्रता, स्वावलंबन और स्वाभिमान का महत्व प्राप्त हुआ है ।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार देश में महिला साक्षरता दर मात्र 64.46 फीसदी है जबकि पुरूष साक्षरता दर 82.14 फीसदी है । उल्लेखनीय है कि भारत की महिला साक्षरता दर विश्व के औसत 79.7 से काफी कम है । इसी संदर्भ में आज नई शिक्षा नीति में महिला शिक्षा हेतु किए गए परिवर्तनों व प्रावधानों को किस प्रकार पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले के शैक्षिक विचारों से प्रेरित किया गया । नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बालिकाओं और महिलाओं की शिक्षा में भागीदारी बढ़ाने के लिए कुछ प्रावधान किये गए हैं । जिसमें जेण्डर – समावेशी कोष (पैरा 6.8 एन.ई.पी. 2020) की स्थापना एक नया और क्रांतिकारी कदम है लेकिन ये प्रावधान स्त्रियों के लिए तय किये गए सामाजिक मापदंडों और घरेलू कार्यों के बोझ से मुक्त करवा कर शिक्षा की ओर प्रेरित करना है ।

शब्दकुंजी: सावित्रीबाई फुले की भूमिका, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, समावेशी शिक्षा, सावित्रीबाई फुले के सामाजिक कार्य ।

परिचय: सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को हुआ था । उनके पिता का नाम खंडोजी नेवसे और माता का नाम लक्ष्मी था । उनका जन्म एक दलित समुदाय में हुआ था । उनके पिता लड़कियों की शिक्षा के खिलाफ थे । सावित्रीबाई के जीवन में हुई घटना से इस बात की पुष्टि स्पष्ट होती है जब बचपन में एक बार वह जल्दबाजी में एक अंग्रेजी पुस्तक के पन्ने पलट रही थी, अचानक उसके पिता ने उसे ऐसा करते हुए देख लिया और वह बहुत ही नाराज हुए तथा पुस्तक को छीनकर खिड़की से बाहर फेंक दिया और उन्हें दोबारा ना पढ़ने के सख्त निर्देश दिए । उस समय वह शांत रही । सावित्रीबाई का विवाह मात्र 9 वर्ष की आयु में सन् 1840 में 13 वर्षीय ज्योतिराव फूले से हुआ था और उनकी कोई संतान नहीं थी । उन्होंने एक पुत्र यशवंतराव (जो कि एक विधवा ब्राह्मण महिला क घर में पैदा हुए थे) को गोद लिया था । सावित्रीबाई फुले की जब शादी हुई तब वह पूर्ण रूप से अशिक्षित थी, लेकिन उनके पति ज्योतिराव फुले ने उन्हें घर पर ही शिक्षित किया । स्वयं शिक्षित

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, December 2024

होकर उन्होंने अन्य महिलाओं को पढ़ाने की जिम्मेदारी उठाई । यह कार्य निःसदेह सावित्रीबाई के लिए बहुत ही चुनौतीपूर्ण था, क्योंकि उस समय समाज में महिलाओं को शिक्षित करने का विरोध किया जाता था समाज की संकीण मानसिकता और चहु ओर व्याप्त कुरीतियों का विरोध करते हुए सावित्रीबाई फुले आगे बढ़ी । उन्होंने टीचर ट्रेनिंग प्रोग्राम में हिस्सा लिया इसके पश्चात् पहला अमेरिकन मिशनरी स्कूल खोला । सावित्रीबाई ने पुणे के अंदर ही केवल लड़कियों के लिए तीन अलग–अलग स्कूल बना दिए थे । तीनों स्कुलों में कुल मिलाकर 150 से ज्यादा छात्राएं नामांकित थी । लड़कियों को शिक्षा देने का कार्य उस समय बहुत ही कठिन कार्य था क्योंकि महिला शिक्षा पर पाबंदी थी किंतु समाज के विरोध का उन्होंने डटकर सामना किया । 10 मार्च 1897 को प्लेग महामारी के कारण सावित्रीबाई फुले का निधन हो गया । प्लेग महामारी में सावित्रीबाई प्लेग मरीजों की सेवा करती थी । वह आखरी सांस तक अपने जीवन के उद्देश्यों को लेकर संघर्षरत् रहीं । राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 शिक्षा के सभी स्तरों प्री स्कूल से लेकर माध्यमिक और उच्च शिक्षा तक सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से वंचित समूहों (एस.ई.डी. जी.) की एक समान सहभागिता सुनिश्चित करने पर जोर देती है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समुहों की व्याख्या करते हुए उन्हें अनेक श्रेणियों में बांटा गया है । (पैरा 6.2) इन श्रेणियों को लिंग (महिला व ट्रांसजेन्डर व्यक्ति), सामाजिक – सांस्कृतिक पहचान, भौगोलिक पहचान आदि के आधार पर वर्गीकृत किया गया है । यह भी अनुभव किया गया है कि सामाजिक आर्थिक रूप से पिछड़े ये जो भी समुह हैं उनमें सभी में आधी संख्या महिलाओं की है, इसलिए एस ई डी जी वर्ग के लिए जो भी योजनाएं और नीतिया राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रस्तावित की गई हैं उनमें विशेष रूप से इन समूहों की महिलाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया है । (पैरा 6.7)

ऐसा प्रतीत होता है कि नई शिक्षा नीति 2020 में प्रस्तावित अधिक छात्रवृत्तियाँ, महिला छात्रावासों का विस्तार, अलग से जेंडर समावेशी फंड, क्रेडिट ट्रांसफर, अधिक सुरक्षित स्कुल / विश्वविद्यालय परिसर आदि अपने कदम मिलाकर बालिकाओं और महिलाओं को एक बड़ी संख्या में विद्यालयों तक लाने में कामयाब हो पाएंगें । सामाजिक, आर्थिक रूप से वंचित वर्ग की छात्राएं और सामान्य वर्ग की भी गरीब छात्राएं पढ़ना तो चाहती हैं लेकिन अनेक अभावों का सामना करना पड़ता है । अपने पढ़ाई के खर्चे पूरे करने हेतु कुछ छात्राएं कार्य भी करती हैं, जैसे ट्युशन पढ़ाना, सिलाई करना, शॉपिंग मॉल या दुकानों में नौकरी करना आदि अनेक कठिनाईयों के बाद भी उनमें पढ़ने की जिजीविषा होती है । कई अवसरों पर अध्यापक व्यक्तिगत तौर पर उनकी मदद करते हैं, लेकिन यदि विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों को जेंडर समावेशी फंड में निर्धारित राशि उपलब्ध होगी तो मदद का दायरा बढ़ जाएगा । इस प्रकार महिलाओं की शिक्षा में भागीदारी को बढ़ाने हेतु नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बहुत विस्तृत आयाम हैं शिक्षा के सभी स्तरों में यह नीति जागरूक और संवेदनशील है।

उद्देश्य:

1. सावित्रीबाई फुले का महिला शिक्षा में योगदान का अध्ययन किया।
2. समाज पर सावित्रीबाई फुले के प्रभावों का वर्णन किया गया है ।
3. नई शिक्षा नीति 2020 में समावेशी शिक्षा का अध्ययन किया ।

सावित्रीबाई फुले का महिला शिक्षा में योगदान:

सावित्रीबाई फुले का महिला शिक्षा में योगदान अद्वितीय और ऐतिहासिक है । वह भारत की पहली महिला शिक्षिका थी और उन्होंने समाज में महिलाओं के अधिकारों और शिक्षा के लिए संघर्ष किया ।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, December 2024

1. **पहला कन्या विद्यालय खोला** :– 1848 में अपने पति ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर पुणे में भारत का पहला कन्या विद्यालय शुरू किया । यह उस समय बड़ी बात थी जब महिलाओं की शिक्षा को सामाजिक रूप से स्वीकार नहीं किया जाता था ।

2. **विधवा और दलित शिक्षा पर जोर**: सावित्रीबाई फुले ने विधवाओं और दलितों के लिए शिक्षा के दरवाजे खोले । उन्होंने समाज के सभी वर्गों की महिलाओं को शिक्षा देने का बीड़ा उठाया ।

3. **महिला अधिकारों की पैरवी**: सावित्रीबाई ने बाल विवाह, सती प्रथा और छूआछूत जैसी कुप्रथाओं का विरोध किया । उन्होंने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए शिक्षित होने पर जोर दिया ।

4. **महिला शिक्षा की भूमिका**: सावित्रीबाई फुले ने खुद शिक्षिका बनकर यह उदाहरण प्रस्तुत किया कि महिलाएं भी शिक्षा के क्षेत्र में नेतृत्व कर सकती हैं । साथ ही उन्होंने कई महिलाओं को शिक्षिका बनने के लिए प्रोत्साहित किया ।

समाज पर सावित्रीबाई फुले का प्रभाव:

सावित्रीबाई फुले का समाज पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा, विशेषकर महिलाओं के उत्थान और समाज में व्याप्त अंधविश्वास, जातिवाद और अन्य सामाजिक असमानताओं के खिलाफ:

1. **बाल विवाह और सती प्रथा का विरोध**: सावित्रीबाई फुले ने बाल विवाह और सती प्रथा जैसे कुरीतियों का विरोध किया उन्होंने समाज के सामने महिला अधिकारों और उनके सम्मान की बात की और इन कुप्रथाओं के खिलाफ आवाज उठाई ।

2. **जातिवाद और अस्पृश्यता के खिलाफ संघर्ष**: उन्होंने जातिवाद और समाज वे व्याप्त अस्पृश्यता के खिलाफ भी आवाज उठाई । उन्होंने अनुसूचित जाति और जानजाति के बच्चों को शिक्षा देने का कार्य किया, जिससे समाज में समता की भावना उत्पन्न हो सके ।

3. **कविता और साहित्य में योगदान**: सावित्रीबाई फुले ने सामाजिक मुद्दों पर कविताएं लिखी, जिनमें महिलाओं की स्थिति, उनके अधिकारों और समाज की नकारात्मक सोच के खिलाफ जगकर आवाज उठाई ।

4. **समाज सुधारक के रूप में पहचान**: सावित्रीबाई फुले ने समाज सुधारक के रूप में समाज के प्रत्येक वर्ग को समान अधिकार मिलने की बात की और उनकी सोच और कार्यों ने भारतीय समाज को जागरूक किया और एक नई दिशा दी ।

नई शिक्षा नीति 2020 में समावेशी शिक्षा:

न्यायसंगत और समावेशी शिक्षा पर फोकस करती राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन ई पी) 2020 इस विचार को प्रति ध्वनित करती है कि किसी भी बच्चे को उसकी पृष्ठभूमि और सामाजिक सांस्कृतिक पहचान के कारण शैक्षिक अवसरों के मामले में पीछी नहीं छोड़ा जाना चाहिए । राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 विशेष रूप से लड़कियों और ट्रांसजेंडर विद्यार्थियों के लिए एक जेंडर इनक्लुजन (जी आई एफ) स्थापित करने का प्रावधान करती है ।

सरकार के अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन ई पी) 2020 को स्थानीय स्व निकायों, 2.5 लाख ग्राम पंचायतों, 6600 ब्लाकों, 6000 यू सी बी एस और 676 जिलों के विभिन्न स्तरों से 2 लाख से अधिक सुझावों पर विचार करने के बाद तैया किया गया है ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन ई पी) 2020 का सबसे बड़ा प्रयास पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग के रूप में लैंगिक संवेदनशीलता लाना तथा कक्षा 12 तक लैंगिक समावेशन निधि जुटाना है जिसमें सभी सामाजिक आर्थिक रूप से वंचित समुहों और ट्रांसजेंडरों को भी शामिल किया जाएगा ।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, December 2024

सरकारी स्कूलों में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति, लड़कियों की स्कूल छोड़ने की दर ने देश को शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ा बना दिया है । लेकिन नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन ई पी) 2020 ने बहु विषयक कार्यक्रमों को संभालने के नए तरीके के साथ स्कूली शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया है और शिक्षण, सीखने और मूल्यांकन में 21वीं सदी के कौशल पर ध्यान केंद्रित करती है । नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन ई पी) 2020 शिक्षा को अपने विकास एजेंडे के केन्द्र में रखा है और सामुदायिक भागीदारी के साथ लैंगिक, सामाजिक, क्षेत्रीय अंतर को पाटने के साथ यह नीति सभी के लिए समान अवसरों की दिशा में उत्साह बढ़ाएगी और यह प्राचीन व आधुनिक दोनों ज्ञान प्रणाली का सुंदर मिश्रण है जो भारतीय संस्कृति और लोकाचार को एकीकृत करने भी मदद करेगा ।

निष्कर्ष:

भारत की पहली महिला शिक्षक के रूप में सदैव ही सावित्रीबाई फुले का नाम जाना जाएगा महिलाओं की शिक्षा एवं समाज सुधार के कार्यों में उन्होंने अपने जीवन को समर्पित कर दिया, महिला जो कि स्वयं पिछड़ी जाति की थी उसने स्वयं को शिक्षित कर महिलाओं को शिक्षा रूपी प्रकाश से प्रकाशित कर जीवन जीने की कला सिखाई समाज के उत्थान के लिए अंतिम सांस तक प्रयत्नशील रही ।

संदर्भ सूची:

[1]. तिलक, रजनी (2017) ''सावित्रीबाई फुले रचना समग्र'' द मार्जिनलाइब्ड पब्लिकेशन्स, दिल्ली पेज 98 ।
[2]. बौद्ध शांति स्वरूप (2004) ''सावित्रीबाई फुले सचित्र जीवनी'', सम्यक प्रकाशन इलाहाबाद ।
[3]. राय, विनीत, रीता (2018) ''फर्स्ट इण्डियन वुमन टीचर सावित्रीबाई फुले : बायोग्राफी ऑफ सावित्रीबाई फुले'', एजुकेशन पब्लिशिंग नई दिल्ली, पेज 51, 53 ।
[4]. वैध प्रभाकर (1992) ''ज्योतिबा फुले और उनकी परम्परा'', लोक वाड्.मय, मुम्बई पेज 85–90 ।
[5]. मिश्रा मृत्युंजय, ''एक समावेशी विद्यालय का निर्माण'' अरिहंत शिक्षा प्रकाशन, जयपुर ।
[6]. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ।